लोकान् =लोको को; **समग्रान्** =सम्पूर्ण रूप से; **वदनैः** =मुखों द्वारा; **ज्वलद्भिः** =प्रज्वलित; **तेजोभिः** =तेज से; **आपूर्य** =परिपूर्ण कर के; **जगत्** =जगत् को; **समग्रम्** = सम्पूर्ण; **भासः** =प्रकाश; **तव** =आपका; **उग्राः** =प्रचण्ड; **प्रतपन्ति** =तपायमान करता है; **विष्णो** =हे विष्णो।

अनुवाद

हे विष्णो! हे विश्वव्यापिन्! मैं देखता हूँ कि आप अपने प्रज्वलित मुखों से सम्पूर्ण लोक को ग्रसते हुए सब ओर से चाट रहे हैं तथा आपका उग्र प्रकाश ब्रह्माण्ड को तेज से परिपूर्ण कर के जगत् को तपा रहा है।।३०।।

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।।३१।।

आख्याहि =कृपया कहिये; **मे** =मेरे प्रति; **कः** =कौन हैं; **भवान्** =आप; **उग्ररूपः** =उग्ररूप वाले; **नमः अस्तु** =नमस्कार हो; **ते** =आपको; **देववर** =हे देवों में श्रेष्ठ; **प्रसीद** =प्रसन्न हो जाइये; **विज्ञातुम्** =जानना; **इच्छामि** =चाहता हूँ; **भवन्तम्** =आपको; **आद्यम्** =आदिस्वरूप; **न** =नहीं; **हि** =ही; **प्रजानामि** =जानता; **तव** =आपका; **प्रवृत्तिम्** =प्रयोजन।

अनुवाद

हे देवाधिदेव! कृपया कहिये कि उग्ररूपधारी आप कौन हैं? मैं आपको प्रणाम करता हूँ; मुझपर प्रसन्न होइए। हे आदिस्वरूप! मैं आपको जानना चाहता हूँ, क्योंकि आपकी प्रवृत्ति को नहीं जानता।।३१।।

श्रीभगवानुवाच।
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।३२।।

श्रीभगवान् उवाच =श्रीभगवान् ने कहा; **कालः** =महाकाल; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **लोक** =लोकों का; **क्षयकृत** =नाश करने वाला; **प्रवृद्धः** =बढ़ा हुआ; **लोकान्** =समस्त लोकों को; **समाहर्तुम्** =नष्ट करने के लिये; **इह** =इस समय; **प्रवृत्तः** =प्रवृत्त हूँ; **ऋते अपि** =बिना भी; **त्वाम्** =तेरे; **न** =नहीं; **भविष्यन्ति** =रहेंगे; **सर्वे** =सब; **ये** =जो; **अवस्थिताः** =स्थित है; **प्रत्यनीकेषु** =विपक्षियों की सेना में; **योधाः** =सैनिक।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! मैं लोकों का नाश करने के लिए बढ़ा महाकाल हूँ और इस समय इन लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिए तुम